राहुल गाँधी

कल, आज और कल

संपादक

एच.एल. दुसाध

डॉ. अनीता गौतम

राहुल गांधी
कल, आज और कल

सम्पादक

एच.एल. दुसाध

डॉ. अनीता गौतम

दुसाध प्रकाशन

लखनऊ

अनुक्रम

सम्पादकीय (द्वितीय संस्करण)		9
सम्पादकीय (प्रथम संस्करण)		25
अध्याय-1 : कांग्रेस की अभूतपूर्व पराजय		
कांग्रेस को हर दांव पड़ा उल्टा		41
बेटे को बचाने फिर आगे आईं सोनिया		43
हार की समीक्षा करने वाली कमेटियों से भी हार गई कांग्रेस		44
प्रियंका लाओ, कांग्रेस बचाओ		46
माँ-बेटे की भेंट चढ़ी कांग्रेस	*–अश्विनी कुमार*	47
पार्टी की हार से उपजा सवालों का पहाड़		49
टूट भी सकती है कांग्रेस	*–नीरजा चौधरी*	50
अकेला पड़ गया हाथ, नहीं मिला साथ	*–सरोज नागी*	52
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो!	*–डॉ. दर्शन सिंह हरविंदर*	55
राहुल क्यों हारे, प्रियंका क्या करेंगी!	*–राजकिशोर*	59
कहीं अपने ही न छोड़ दें हाथ का साथ!	*–रणविजय सिंह*	61
तो क्या कांग्रेस युग का अंत हो गया है?	*–अरुणा सिंह*	64
अन्दरूनी लड़ाई में ढही कांग्रेस	*–अन्तत विजय*	68

अध्याय-2 : 15वीं लोकसभा चुनाव का महानायक

राजनीति के 'शिशु' ने साबित की सियासी परिपक्वता 73

राहुल फैक्टर ने दिखाया जादू —*अजय तिवारी* 75

राहुल बाबा के प्रचार के सामने फीका रहा भाजपा का अभियान 77

अपनी राजनीति का खाका खुद ही तैयार किया राहुल गांधी ने —*प्रदीप श्रीवास्तव* 79

राहुल गांधी का करिश्मा —*संजय गुप्त* 81

कांग्रेस की विजय : विपक्ष की रणनीति की हार —*एच.एल. दुसाध* 83

राहुल की राह में एवरेस्ट : जाति चेतना का राजनीतिकरण —*एच.एल. दुसाध* 90

अध्याय-3 : राहुल गांधी : सोलहवीं लोकसभा चुनाव का ट्रेजडी नायक

कुनबे को बचाना चुनौती —*इंदर मल्होत्रा* 97

घिरता अन्धकार, साथ छोड़ते साए —*अरविन्द मोहन* 99

कांग्रेस के भविष्य की राह —*आशुतोष मिश्र* 102

कठिन राह पर कांग्रेस —*डॉ. निरंजन कुमार* 105

हम एक हैं : भाजपा-कांग्रेस —*एच.एल. दुसाध* 108

कैसे हो कांग्रेस का पुनरुद्धार —*एच.एल. दुसाध* 111

कांग्रेस के पुनरुद्धार के लिए डाइवर्सिटी ही क्यों! —*एच.एल. दुसाध* 113

राहुल गांधी : हिन्दू मीडिया द्वारा तिरस्कृत एक ट्रेजडी नायक —*एच.एल. दुसाध* 119

राहुल गांधी : कल, आज और कल —*एच.एल. दुसाध* 122

अध्याय-4 : राहुल गांधी : सामाजिक न्याय की राजनीति के नए आइकॉन

भाजपा वर्ग–शत्रु तो कांग्रेस बहुजनों का वर्ग-मित्र है —*एच.एल. दुसाध* 131

कांग्रेस ने फिर खुद को साबित किया : बहुजनों का वर्ग-मित्र! —*एच.एल. दुसाध* 135

भाजपा की हार सुनिश्चित करने के लिए जरूरी है :
सामाजिक न्यायवादी विजन! —*एच.एल.दुसाध* 139

राहुल गाँधी : भारतीय राजनीति के दारा शिकोह! —*जावेद अनीस* 149

मंडल-3 की गाड़ी हांक सकते हैं राहुल —*योगेंद्र यादव* 153

कर्णाटक का सन्देश —*एच. एल. दुसाध* 158

सोशल जस्टिस का पिटारा! —*एच.एल. दुसाध* 164

भाजपा को शिकस्त देना सबसे आसान
पॉलिटिकल टास्क —*एच.एल. दुसाध* 173

राहुल गाँधी का परिचय 178

सम्पादकीय : द्वितीय संस्करण

डियर सर/ मैडम!

कर्णाटक में कांग्रेस की ऐतिहासिक विजय के बाद जब राजनीतिक विमर्श के केंद्र में राहुल गांधी और उनका सामाजिक न्यायवादी एजेंडा आ गया : मैंने 22 मई को बदले हुए हालात में लोगों की राय परखने के मकसद से अपने व्हाट्सप ग्रुप और फेसबुक पर यह पोस्ट डाला, '2014 में जब मोदी की सुनामी में कांग्रेस राजनीति के पंडितों के मुताबिक आईसीयू में पहुंच गयी और खुद कांग्रेस के कई प्रान्तों के नेता राहुल गांधी को ख़ारिज करते हुए नेतृत्व प्रियंका के हाथ में देने की मांग उठाने लगे, वैसे समय में कांग्रेस और राहुल गाँधी के पुनरुद्धार के लिए मैंने अक्टूबर 2014 में डॉ. अनीता गौतम के साथ मिलकर एक किताब तैयार किया, जिसमें कुछ ऐसे नुस्खे सुझाये गए थे, जिसका अनुसरण कर न सिर्फ कांग्रेस पुनर्जीवित हो सकती थी, बल्कि राहुल गांधी पंडित नेहरू की बुलंदी छू सकते थे। 'दुसाध प्रकाशन' द्वारा तैयार उस किताब का नाम था, 'राहुल गाँधी : कल, आज और कल!' उस किताब में हमने राहुल गांधी और कांग्रेस के पुनरुद्धार के लिए कैसे लॉजिक रखे थे, उससे अवगत कराने के लिए उस किताब के कुछ लेख पेश करने जा रहा हूँ। उम्मीद है आप पढेंगे!'

कैसे हो कांग्रेस का पुनरुद्धार

उस किताब के आवरण के साथ जो लेख हमने पोस्ट किये थे, वे रहे : **कैसे हो कांग्रेस का पुनरुद्धार, कांग्रेस के पुनरुद्धार के लिए डाइवर्सिटी ही क्यों** तथा **राहुल गांधी : हिन्दू मीडिया द्वारा तिरस्कृत एक महानायक!** ये तीनों लेख राहुल गांधी वाली किताब के क्रमशः 95, 98 तथा 103 पेज पर छपे थे। 22 मई के मेरे उस पोस्ट पर विद्वान मित्रों की बहुत उत्साहवर्द्धक राय आई। सबसे अच्छा रिस्पांस **राहुल गांधी : हिन्दू मीडिया द्वारा तिरस्कृत एक महानायक** पर मिली! इस पर चर्चित टिप्पणीकार सुब्रतों चटर्जी की राय रही, **बहुत उम्दा विश्लेषण**! वहीं हेमंत ठाकुर, जो अक्सर मेरे पोस्टों से असहमति जताते रहते हैं, का कमेंट रहा, **पिछले दो दशक के राजनीतिक**

इतिहास के साथ कई चुनावी पड़ावों के कालक्रम एवं घटनाक्रम पर आधारित बेहतरीन विश्लेषण एवं आंकलन है। मानवीय मूल्यों को तरजीह देने वाले नेता के व्यक्तित्व को सही शब्दों में व्यक्त की गयी है। सचमुच लाजवाब! प्रोफ़ेसर शांति यादव की राय रही, जो भी विश्लेषक हैं राहुल गांधी को बदनाम कर रहे या नकार रहे हैं.वे कही न कही नकारात्मकता से ग्रसित हैंः चाहे वे अख़बार के हों या सोशल मीडिया के हों। उनका दिमाग कूड़े के ढेर से ज्यादा कुछ भी नही हैं। गोदी मीडिया तो मोदी का तोता है, उसका तो कहना ही क्या?सत्य संघर्ष करता है पर, जीतता अवश्य है। भले ही थोड़ा समय लगे। राहुल गांधी अब जननेता हैं, जनता ही उन्हें जिताएगी। राहुल गाँधी को बहुत लालच भी नही है पीएम बनने का। पर, वह अवश्य बनेंगेः इतिहास पुरुष होंगे!

कांग्रेस के पुनरुद्धार के लिए डाइवर्सिटी ही क्यों! पर उमाशंकर आर्य साहब की राय रही, बेशक आपका लेखन सराहनीय है तथा कांग्रेस के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत पर आधारित है। आपने देखा होगा कि कर्णाटक चुनाव में श्री राहुल गांधी ने जाति आधारित जनगणना का मुद्दा उठा दिया। कांग्रेस अपने उदय के समय से पिछले वर्षो तक ऐसा मुद्दा नही उठा पाई। एक नई क्रांति का प्रारंभ श्री राहुल गांधी जी ने किया है। यह इस प्रक्रिया की ओर ले जाता है कि विकास के सभी स्रोतों में जनसंख्या के अनुपात में बंटवारा हो। यह परिनिर्वाण प्राप्त कांशीराम जी के नारे- जिसकी जितनी संख्या भारी, उतनी उसकी भागीदारी- को मूर्त रूप देना है। और यह उन्होंने मान्यवर कांशीराम जी के विषय में अध्ययन और उनके खास अनुयायी से वार्ता करके सीखा,जो आज प्रदेश के शीर्ष पद पर हैं। वार्ता के दौरान मुझसे उन्होंने बताया कि जब श्री राहुल गांधी जी उत्तर प्रदेश के कुछ जिलों का दौरा कर रहे थे, तब उन्होंने सवाल किया कि कांशीराम दलित समाज में इतना लोकप्रिय कैसे हुए? फिर वह बात उनके दिलो दिमाग में बैठ गयी। और आज वे परिवर्तनकारी राजनीति की तरफ बढ़ रहे हैं, यह एक सुखद एहसास है! इसे हम सभी को गहराई से समझना होगा और समय की मांग है कि कांग्रेस के साथ जुड़कर श्री राहुल जी और खड्गे जी के नेतृत्व वाली कांग्रेस को मजबूत बनाया जाय। माननीय श्री मल्लिकार्जुन खड्गे जी का कांग्रेस का राष्ट्रीय अध्यक्ष चुना जाना उसका प्रारंभ है। मैं अपने इस विचार पर आपकी टिपण्णी चाहूँगा!

कैसे हो कांग्रेस का पुनरुद्धार! लेख पर कईयों की राय हौसला बढाने वाली रही, पर, एक प्रोफ़ेसर मित्र के कमेंट ने तो मेरी किताब को बहुत खास बना दिया! उनका कमेंट रहा, आज साफ़ दिखाई दे रहा है कि पिछले फ़रवरी में कांग्रेस ने रायपुर के अपने 85वें अधिवेशन से खुद को जिस तरह सामाजिक न्याय से जोड़ा एवं कर्णाटक में सामाजिक न्याय के अजेंडे के जोर से जिस तरह भाजपा की नफरती राजनीति को मात दिया, उससे इसका पुनरुद्धार हो चुका है, इसमें कोई संदेह है ही नही है।